DR. MADUGULA NAGAPHANI SARMA

Dr. Madugula Nagaphani Sarma is a renowned Sanskrit and Telugu poet par excellence who has revived, revolutionised and propagated the Bharatiya art of Avadhanam. He is widely recognised across the world for his innovations, melodious voice, divine poetry and songs which made this scholarly art of Avadhanam reach millions of people.

2. Born on June 8, 1958, Dr. Sarma learnt Vedas from his father at a very tender age. He also pursued Ramayana, Mahabharatam, Bhagavatam and other scriptures. He completed Sahitya Shiromani from Sri Venkateswara University, Tirupathi in 1981 and completed Proficiency in Oriental Learning from Andhra University, Waltair in 1982. He completed M.A. in Sanskrit from Andhra University. Further, he completed Doctorate (Ph.D) in Sanskrit from Rastriya Sanskrit Vidyapeeth, Mysore in 1996.

3. Dr. Sarma performed his first Avadhanam at the age of 14 years and was accredited as the youngest Avadhani in the country. In his illustrious career of over 52 years, he has performed over 2000 Avadhanams across the globe. His literary innovations in avadhanam include, Mee Prashnaku Naa Pata- My song to your question, Nrityapadi- Metrical notation to the footwork of dance, Swarapadi- Extempore poetry to Sonic metre. He is the first and only Avadhani to perform Maha Sahasravadhanam with 1116 Scholars and then Dwi Sahasravadhanam with 2116 Scholars in Sanskrit and Telugu. His savadhanams had crossed Indian shores and drew audiences across the world in various countries such as U.S.A., Australia, Singapore, Bahrain, U.K., Germany, France, etc. He has authored over 40 books, 33000 Poems, authored and rendered over 3000 songs- stotras in his melodious voice, delivered over 11000 hours of discourses on Sanskrit and Telugu literature, Santana Dharma, thus promoting Vedic, spiritual and nationalistic ideals in society.

4. Dr. Sarma established Avadhana Saraswathi Peetham, an ashram about 30 years ago, which is an abode to Goddess Saraswathi (Temple) and Goshala serving over 100 desi cows. He serves the society through the numerous Educational, Cultural, Spiritual and Welfare programs benefitting over onelakh students and general public from different sections of the society. He served as Additional Secretary, Dharma Prachara Parishad, Tirumala Tirupati Devasthanam (1990-92). He also served as Chairman (Cabinet Rank), Official Language Commission (1999-2002), Government of Andhra Pradesh (undivided). He has greatly advanced the popularity of Avadhanam, Indian Languages and Culture in these roles.

5. Dr. Sarma has been honoured with covetous honours from chief pontiffs of Kanchi Kamakoti Peetham, Sringeri Sarada Peetham, Mysore Datta Peetham. He is the recipient of many awards like Ugadi Puraskaram by Government of Andhra Pradesh (1997), Kopparapu Kavula National Award by Kopparapu Kavula Kala Peetham(2016), Swastivachanam Award by Sarwabhoma Sanskrit Samvardhana Samstha(2014), Sri Kala Poorna by SAPNA, U.S.A.(2002), Lifetime Achievement Award by World Telugu Federation(1992), American Telugu Association(2004), Telugu Association of North America(2005), Sivananda Eminent Citizen Award by Sanatana Dharma Charitable Trust(2017), Nanduri Ramakrishna Memorial Centenary Award (2022) etc. He has also been honoured with the titles- Avadhana Sahasraphani, Tarun Tapasvi, Human Computer, Intellectual Super Computer, Medha Ratna,etc. by eminent leaders in public life.

डॉ. माडुगुल नागफणि शर्मा

डॉ. माडुगुल नागफणि शर्मा एक विख्यात संस्कृत और तेलुगु कवि हैं, जिन्होंने अवधानम की भारतीय कला को पुनर्जीवित कर, उसमें नवाचारी बदलाव लाकर उसे प्रसारित किया। वह अपने नवाचारों, मधुर आवाज, दिव्य कविता और गीतों के लिए दुनिया भर में व्यापक रूप से पहचाने जाते हैं, जिससे अवधानम की यह विद्वत्तापूर्ण कला लाखों लोगों तक पहुंची है।

2. 8 जून, 1958 को जन्मे, डॉ. शर्मा ने बहुत ही कम उम्र में अपने पिता से वेदों की शिक्षा ली। उन्होंने रामायण, महाभारत, भागवतम और अन्य शास्त्रों का भी अध्ययन किया। उन्होंने वर्ष 1981 में श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय, तिरुपति से साहित्य शिरोमणि की डिग्री प्राप्त की और 1982 में आंध्र विश्वविद्यालय, वाल्टेयर से प्राच्य विद्या में प्रवीणता प्राप्त की। उन्होंने आंध्र विश्वविद्यालय से संस्कृत में एम.ए. की डिग्री प्राप्त की। इसके अलावा, उन्होंने वर्ष 1996 में राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, मैसूर से संस्कृत में डॉक्टरेट (पीएचडी) की डिग्री प्राप्त की।

3. डॉ. शर्मा ने 14 वर्ष की आयु में अपना पहला अवधानम प्रस्तुत किया और इससे उन्हें देश में सबसे कम उम्र के अवधानी के रूप में मान्यता दी गई। 52 वर्षों से अधिक के अपने शानदार करियर में, उन्होंने दुनिया भर में 2000 से अधिक अवधानम प्रस्तुत किए हैं। अवधानम में उनके साहित्यिक नवाचारों में शामिल हैं, मी प्रश्नकु ना पाटा– आपके प्रश्न के लिए मेरा गीत, नृत्यपदी– नृत्य के पदचिह्नों के लिए मीट्रिक संकेतन, स्वरापदी– ध्वनि छंद के लिए तुरंत रची गई कविता। वह 1116 विद्वानों के साथ महासहस्रावधानम और फिर 2116 विद्वानों के साथ संस्कृत और तेलुगु में द्विसहस्रावधानम प्रस्तुत करने वाले पहले और एकमात्र अवधानी हैं। उनके सावधानम् ने भारत की सीमाओं को पार कर विश्व भर के देशों जैसे अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, सिंगापुर, बहरीन, ब्रिटेन, जर्मनी, फ्रांस आदि में श्रोताओं को आकर्षित किया। उन्होंने 40 से अधिक पुस्तकें, 33000 कविताएं लिखी हैं, अपनी मधुर वाणी में 3000 से अधिक गीत–स्तोत्रों की रचना और गायन किया है, संस्कृत और तेलुगु साहित्य, सनातन धर्म पर 11000 घंटों से अधिक प्रवचन दिए हैं, इस प्रकार समाज में वैदिक, आध्यात्मिक और राष्ट्रवादी आदर्शों को बढ़ावा दिया है।

4. डॉ. शर्मा ने करीब 30 वर्ष पहले अवधना सरस्वती पीठम नामक आश्रम की स्थापना की थी, जो देवी सरस्वती (मंदिर) का निवास स्थान है और इसमें 100 से ज़्यादा देसी गायों की सेवा करने वाली गोशाला है। वह कई शैक्षणिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक और कल्याण कार्यक्रमों के ज़रिए समाज की सेवा करते रहे हैं, जिससे समाज के अलग–अलग वर्गों के एक लाख से ज़्यादा छात्र और आम जनता लाभान्वित हुई है। वह धर्म प्रचार परिषद्, तिरुमाला तिरुपति देवस्थानम (1990–92) के अपर सचिव के पद पर कार्यरत रहे। उन्होंने आंध्र प्रदेश (अविभाजित) सरकार के राजभाषा आयोग के अध्यक्ष (कैबिनेट रैंक) (1999–2002) के रूप में भी कार्य किया। इन भूमिकाओं में उन्होंने अवधानम, भारतीय भाषाओं और संस्कृति की लोकप्रियता को काफ़ी बढ़ाया है।

5. डॉ. शर्मा को कांची कामकोटि पीठम, श्रृंगेरी सारदा पीठम, मैसूर दत्त पीठम के मुख्य मठाधीशों से प्रतिष्ठित सम्मान से सम्मानित किया गया है। उन्हें आंध्र प्रदेश सरकार द्वारा उगादि पुरस्कार (1997), कोप्पारापु कवुला कला पीठम द्वारा कोप्पारापु कवुला राष्ट्रीय पुरस्कार (2016), सर्वभोमा संस्कृत संवर्धन संस्था द्वारा स्वस्तिवचनम पुरस्कार (2014), सपना, यू.एस.ए. द्वारा श्री कला पूर्णा (2002), वर्ल्ड तेलुगु फेडरेशन द्वारा लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड (1992), अमेरिकन तेलुगु एसोसिएशन (2004), तेलुगु एसोसिएशन ऑफ नॉर्थ अमेरिका (2005), सनातन धर्म चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा शिवानंद प्रख्यात नागरिक पुरस्कार (2017), नंदूरी रामकृष्ण मेमोरियल सेंटेनरी अवार्ड (2022) आदि जैसे कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। सार्वजनिक जीवन में प्रतिष्ठित नेताओं द्वारा उन्हें अवधना सहस्रफणी, तरुण तपस्वी, मानव कम्प्यूटर, बौद्धिक सुपर कम्प्यूटर, मेधा रत्न आदि उपाधियों से भी सम्मानित किया गया है।